'Research Journey' International Multidisciplinary E-Research Journal
Vol. 1 Issue. 1
ISSN : 2348-7143 (Online)
Jan-March - 2014

जनसंचार के विविध माध्यमों में हिन्दी का बढ़ता प्रभाव

- श्री. निकम भूषण धनराज
अनुसंधाता छात्र, हिन्दी विभाग,
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय
जलगाँव . ४२५ ००१

समाचारपत्र, पत्र-पत्रिकाएँ, आकाशवाणी, दूरदर्शन, सिनेमा, संगणक, भ्रमणध्वनि (दूरभाष) और इंटरनेट आदि सभी जनसंचार के माध्यमों में संदेशवहन का कार्य करने में हिन्दी का ही प्रयोग किया जा रहा हैं। हिन्दी का जनसंचार के माध्यमों में बदलते समय के साथ भी अपना मार्ग बदलाया हुआ दिखाई देता हैं। स्वतंत्रता के पुर्व से लेकर आज तक की बातें यह जन-मानस तक पहुँचाने में महत्त्वपुर्ण कार्य हिन्दी ने किया है।

पृष्ठभूमि :

भाषा संचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। जनसंचार का कार्य भाषा के बिना संभव नहीं है। आज के इस आधुनिक काल को सूचनाओं के विस्फोट का काल / समय माना गया है,क्योंकि जनसंचार के इस असंख्य माध्यमों ने,सुविधाओं ने मनुष्य को इतना सूचना संपन्न कभी नहीं बनाया था,जो आज मनुष्य को इतनी सूचनाएँ मिल रही है। आज के इस वैज्ञानिक और तकनिकी युग में संचार माध्यमों का महत्त्व दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा हैं। ये हमारे जीवन को एक नयी दिशा प्रदान करता है। २१ वी सदी के दहलिज पर खड़ी हिंदी भाषा ने सूचना विस्फोट की चुनौतियों को पूरी क्षमता और सक्रियता के साथ अपनाया है। हिंदी भाषा का यह प्रभाव स्वातंत्र्यपूर्व काल,स्वातंत्र्योत्तर काल से लेकर आज तक जनसंचार के माध्यमों में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

जनसंचार के माध्यमों के अंतर्गत मुख्यत: समाचारपत्र,रेडिओ,दूरदर्शन,फिल्म तथा कम्प्युटर आदि आते हैं। जनसंचार के इन सभी माध्यमों ने विश्व में फैली समस्त मानवजाति,जीवन को प्रभावित किया है। 'शिक्षा ने विज्ञान को जन्म दिया है और विज्ञान ने जनसंचार के आधुनिक साधनों को।' जनसंचार के यह साधन मनुष्य की आधुनिक शिक्षा तथा विज्ञान दोनों के प्रचार एवं प्रसार के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका तथा दायित्व का निर्वाह कर रहे हैं।

जनसंचार का अर्थ है - सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना। इतना ही नहीं, जनसंचार के माध्यमोंद्वारा जनमत का निर्माण भी सहज संभव होता है और इसी जनसंचार के विविध माध्यमों में हिंदी का प्रभाव खूब दिखाई देता है।

जनसंचार के माध्यम :-

जनसंचार के समस्त माध्यमों को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है।

१) **मुद्रित माध्यम :-** इसके अंतर्गत १) समाचार पत्र २) पत्र-पत्रिकाएँ ३) पुस्तकें आदि आतें हैं।

२) **श्रव्य संचार माध्यम :-** इसके अंतर्गत १) रेडिओ २) कैसेट ३) टेपरिकॉर्डर आदि आते हैं।

३) दृक-श्रव्य संचार माध्यम :- इस कोटि के अंतर्गत १) दूरदर्शन,२) इंटरनेट,३) फिल्म आदि आते हैं।

अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा हैं और वह जितनी सहज और सुलभ होगी उतना ही उसका समाज में प्रभाव बढ़ता है। यही कारण हैं कि,संचार माध्यमों ने भाषा की अभिव्यक्ति के लिए हिंदी को चुना जो आज विश्व में सबसे ज्यादा लोगों की बोली जानेवाली भाषा है। जनसंचार के विविध माध्यमों द्वारा हिंदी का समाज में बढ़ता प्रभाव निम्न वर्गोंद्वारा स्पष्ट किया हैं-

१) समाचारपत्र,पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तके :-

जनसंचार का काम हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ आजादी के पहले भारत में करती आ रही है। हिंदी में पहला समाचारपत्र पंडीत युगल किशोर सुकुल ने ३० मई १८२६ में "उदन्त मार्तन्ड" का प्रकाशन किया,जो एक अहिन्दी भाषी प्रदेश कोलकाता से किया। ३० मई १८२६ को ही कर्नाटक से भी एक हिन्दी 'दैनिक समाचारपत्र','राजस्थान पत्रिका' का प्रकाशन जो १३ वर्षों से नियमित हो रहा है। तत्कालीन मद्रास से बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका 'चंदामामा' का प्रकाशन हुआ। हैद्राबाद से कभी 'कल्पना' निकलती थी,आज वहाँ से हिन्दी मिलाप निकल रहा है। आज भी हिन्दी के अखबारों की प्रसारसंख्या अधिक देखने को हमें मिल रही है।[१]

डॉ. प्रभाकर माचवे ने - समाचारपत्र, पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तक जैसे जनसंचार माध्यम को 'जनसंचार माध्यम की चौथी या पाँचवी रियासत' में लिखा है कि,-"पुराने जमाने में राजा,गुरू और पंच ही शक्ति के केंद्र थे। सिंहासन, मंदिर या मठ और ग्रामपंचायत लोगों के विचारों के निर्णायक और शास्ता थे,धीरे-धीरे शिक्षालयों ने इसका स्थान ले लिया। 'पैडेगोमिक्स' (विद्यालय) और प्रेस ने पुरानी 'प्रिन्स,प्रीस्ट और प्रायमरी स्कुल का स्थान ले लिया है। महाराजा,महंत और पंच की जगह अखबार आ गए।"[२] जनसंचार माध्यमों में अखबार और समाचारपत्र जनता की धरोवर बन गए हैं। यही आज जनता के रक्षक,आवाज,शिक्षक,कॉलेज अर्थात सब कुछ बन गए।

हिंदी प्रदेशों में व्याप्त गरिबी के कारण सब घरों में भले ही अखबार न पहुँच पाते हो,लेकिन हिन्दी के अखबारों की पाठक संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है। छोटे-छोटे शहरों और कस्बों से हिन्दी अखबार निकल रहा है। उदाहरण के तौरपर यदि देखा जाए तो,'खान्देश' यह एक अहिन्दी भाषी प्रांत होकर भी यहाँ 'लोकमत समाचार' नामक समाचारपत्र प्रकाशित हो रहा है। इस प्रकार जनसामान्य मनुष्यों को समाचारपत्र,पत्र-पत्रिकाओं में से जागृत करने का काम हिन्दी द्वारा ही किया जा रहा है।

२) रेडियो (आकाशवाणी) :-

रेडिओ का भारत में १ नवम्बर १९४७ को सरदार वल्लभभाई पटेलजी के नेतृत्व में पहला प्रसारण केन्द्र खोला गया। इस श्रव्य माध्यम आकाशवाणी ने निरक्षरों और आम आदमी तक हिन्दी भाषा और साहित्य संस्कार पहुँचाने में बड़ी भूमिका अदा की है। कविगोष्टी,गीतगोष्टी,कहानी गोष्टी के माध्यम से हिंदी साहित्य आम जनता तक पहुँच जाता

है। 'विष्णु प्रभाकर' को नाटककार बनाने में आकाशवाणी का ही बड़ा योगदान रहा है। आकाशवाणी से हिन्दी के अनेक अमर उपन्यासों का रूपांतरण हुआ है। कई लोग निरक्षर होने के कारण उनको कभी नहीं पढ़ पाते,पर वे अब 'गोदान', 'मैला आँचल' के बारे में जानते हैं।[३]

आकाशवाणीने समूचे देश में सांस्कृतिक चेतना फैलाने में अमूल्य योगदान दिया है। हिन्दी समाचार सुनकर अहिन्दी भाषी लोग भी हिंदी सीखतें हैं। हिन्दी के माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाओं में एकता लाने में भी आकाशवाणी की भूमिका रही है। गाँव देहात में आज भी आकाशवाणी के हिन्दी कार्यक्रम तन्मयता से सुनते हैं।

३) दूरदर्शन :-

दूरदर्शन का आरंभ बहुत धीमा हुआ था,किन्तु उसके बाद इसने गति पकड़ी और इस समय भारत में हिन्दी टेलिव्हिजन चैनलों की बाढ़ आयी। भारत में अपने आरंभ से लगभग ३० वर्षों दूरदर्शन की प्रगति धिमी रही किन्तु वर्ष १९८० और ९० के दशक में दूरदर्शन राष्ट्रीय कार्यक्रम और समाचारों के प्रसारण के जरिये हिंदी को जनप्रिय बनाने में काफी योगदान दिया।[४] 'कृष्णकुमार रत्तु ने - दूरदर्शन की भाषा केन्द्रिय बिंबो की भाषा मानी हैं।' बढ़ते हुए संचार माध्यम और भाषा के नए प्रयोगों ने,जो दृश्य-श्रव्य संप्रेषण के विविध आयामों को अपने में समेटे हुए हैं। अपनी स्पष्ट छाप छोडी है और यही दूरदर्शन और हिन्दी की बीच की कड़ी है।[५]

दूरदर्शन शुरू में अनेक निजी चैनलों ने हिन्दी की उपेक्षा की,लेकिन जल्दी ही उन्हें महसुस हुआ कि,हिन्दी के बगैर काम चलनेवाला नहीं है,तो हिन्दी को माध्यम बनाना होगा। 'हिन्दी ही भारत के जनसंचार माध्यमों की वास्तविक भाषा हैं।'सभी चैनल आज हिन्दी धारावाहिक,टॉक शो,नाटक,परिचर्चाएँ दिखा रहे हैं। स्टार न्यूज,न्युज २४,सहारा समय आदि जैसे चैनल २४ घंटे हिन्दी में समाचार देते हैं। टेलिव्हिजन पर अनेक अहिन्दी भाषी अंग्रेजी नेता भी हिन्दी बोलने लगे हैं। भारत में इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग दिन-ब-दिन बढ़ रहा हैं,जो देश की संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी के विकास का स्पष्ट संकेत है।

४) सिनेमा :-

संचार माध्यमों का अपना-अपना स्वतंत्र अस्तित्त्व है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में सिनेमा एका सशक्त माध्यम है,जो हमारे जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है। सन् १९१३ में दादासाहब फालकेद्वारा बनायी गई मुक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र'के कार्ड हिन्दी में तैयार किये गये थे,जिसे हिन्दी भाषा की व्यापकता ही कहा जा सकता है।

आज हिन्दी साहित्य के उपन्यास पर भी कई फिल्मांकन हो रहे हैं। जिसमें - १) राजेंद्र यादव का उपन्यास 'सारा आकाश' पर आधारित फिल्म-'सारा आकाश' बनी,जो व्यावसायिक दृष्टि से सफल है। २) जैनेंद्र का उपन्यास 'त्यागपत्र'पर आधारित फिल्म 'त्यागपत्र'जो उपन्यास १९३७ में प्रकाशित हुआ था,यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास था। ३) मन्नु भंडारी की कहानी 'यही सच है' पर आधारित फिल्म यह 'रजनीगंधा' जो कथा साहित्य पर बासु चटर्जी की दूसरी

महत्त्वपूर्ण फिल्म थी। ४) कमलेश्वर की कहानी 'तलाश'पर आधारित 'फिर भी' और उनका ही उपन्यास 'काली आँधी' पर किया। इस प्रकार हिन्दी साहित्य क्षेत्रों में से कहानी,उपन्यास पर भी ऐसी बहुत सारी फिल्में बनी हैं और वह जनसंचार के माध्यमों द्वारा जन-जन तक पहूँच रही है।

'टायटॅनिक' फिल्म को ज्यादा प्रसिद्धि भी हिन्दी की ही वजह से मिली। जब तक वह विदेश में अंग्रेजी में थी,तब तक उन्हें ज्यादा प्रसिद्धि नहीं थी,लेकिन वह भारत में आयी और वह हिन्दी में अनुवादित होते ही उनका प्रचार-प्रसार बढ़ा और उन्हें प्रसिद्धि मिली। इसके साथ ही देवकीनंदन खत्री द्वारा लिखित उपन्यास पर आधारित 'चंद्रकांता'यह धारावाहिक भी कई दिन तक दूरदर्शन पर हिन्दी भाषा में चली। इससे स्पष्ट हैं कि,दृक-श्रव्य संचार माध्यमों में भी हिन्दी का प्रभाव ज्यादा दिखाई देता हैं।

५) संगणक (कम्प्युटर) :-

आधुनिक जीवन में कम्प्युटर ने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को अत्यंत प्रभावित किया हैं। इसलिए आज का युग 'कम्प्युटर का युग' कहलाता हैं। डॉ.मिश्रजी ने कहा हैं कि,-"हिन्दी योगदान हमेशा जारी रहेगा,क्योंकि देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि है और इस लिपि में काम करना बहुत आसान हैं। इनके साथ ही हिन्दी में काम करने की प्रणालियों का विकास भी हो गया हैं। यह सारी व्यवस्था निर्मिती हो गई है और अन्य भाषा के तरह हिन्दी भाषा का भी सॉफ्टवेअर निकल गया है और आज उस काम में हिन्दी विद्यमान है।"

संगणक का उपयोग आज सरकारी कार्यालयों में रेल विभाग, डाक-तार, बँक, अस्पताल के साथ-साथ हिंदी प्रेमियों को भी हुआ है। आज हिंदी में कम्प्युटर सॉफ्टवेअर्स काफी अधिक उपलब्ध है। जिसमें श्रीलिपी, श्रीगणेश, आय.एस.एम., अंकुर लिपी आदि सॉफ्टवेअर विकसित हुए हैं। इस प्रकार कम्प्युटर ने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी हुई है और उनका योगदान हमें सभी क्षेत्रों में आज मिल रहा है।

६) इंटरनेट :-

इंटरनेट विश्व के कम्प्यूटरों का एक समुह है,जो सूचनाओं का आदान-प्रदान करते है। इसमें कम्प्यूटर एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। इस पर भी हिन्दी का अभुतपूर्व विकास हो रहा है। हिन्दी का साहित्य यह नेटपर विविध वेबसाईट्स पर हमें उपलब्ध होते हैं। कई अखबार इंटरनेट पर उपलब्ध है। कई साहित्यिक पत्रिकाएँ नेट पर पढ़ी जा सकती हैं। देश में किसी भी कोने में,यहाँ तक विदेश में भी इंटरनेट पर ब्लॉग यानि चिट्ठे लिखनेवाले लेखकों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

विण्डोज ९८ में डिफाल्ट रूप में हिंदी युनिकोड स्थापित नही होने के कारण हिंदी में काम करना कुछ समय पहले बहुत मुश्किल भरा था। तमाम औजार जुटाने से युनिकोढ दिखाई दिया और उसपर काम किया जाता था। अब बहुत कुछ अच्छे ऑनलाईन कुंजीपट के जरिये विण्डोज ९८ के साथ-साथ सभी में हिंदी में काम करना अत्यंत आसान

हो गया हैं। हिंदी के बारे में साहित्यिक जानकारी पाने हेतु कई वेब साईट है जिसमें www.bharatkosh.com,hindisamay.com आदि वेब साईटों पर आपको ढेर सारा हिंदी साहित्य उपलब्ध हो सकता हैं। इसी तरह गुगल, जी मेल, याहू, फैक्स, ई-मेल, फेसबुक, वॉइस मेल आदि इंटरनेट के ही विविध अंग हैं,जो प्रमुख रूप से हिंदी को प्रसारित करने का कार्य करते हैं। आज इंटरनेट के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार बहुत जोर से हो रहा है और सभी लोगों को इनकी जानकारी यह इंटरनेट के माध्यम से हो रही है।

निष्कर्ष :-

इसप्रकार संक्षेप में हम देखते हैं कि पहले समाचारपत्र, पत्र-पत्रिकाएँ, आकाशवाणी, दूरदर्शन, सिनेमा, संगणक, भ्रमणध्वनि (दूरभाष) और इंटरनेट आदि सभी जनसंचार के माध्यमों में संदेशवहन का कार्य करने में हिन्दी का ही प्रयोग किया जा रहा हैं। हिन्दी का जनसंचार के माध्यमों में बदलते समय के साथ भी अपना मार्ग बदलाया हुआ दिखाई देता हैं। स्वतंत्रता के पुर्व से लेकर आज तक की बातें यह जन-मानस तक पहुँचाने में महत्त्वपुर्ण कार्य हिन्दी ने किया है। ज्ञान की प्राप्ति,विचारों की अभिव्यक्ति का इन संप्रेषण माध्यमों से वह कर सकते हैं। इसलिए इन माध्यमों को हम दुर्लक्षित नहीं कर सकतें।

संदर्भ ग्रंथ :-

१) भाषा की अदालत में समाचारपत्र - पद्मजा घोरपडे (पृ.क्र.२८)
२) प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका - कैलासनाथ पाण्डेय (पृ.क्र.१२०)
३) मधुमती पत्रिका
४) प्रयोजनमूलक हिन्दी - बालजिन्दर कौर रन्धावा
५) हिन्दी साहित्य और सिनेमा - विवेक दुबे
६) व्यावहारिक हिन्दी और रचना - कृष्णकुमार गोस्वामी